झारखंड का हिंदी-खोरठा पाक्षिक पत्र

आपन माटी आपन देश

झार न्यूज

रॉंची, गुरुवार
01 से 15 सितंबर 2022
पेज : 05, मूल्य : निःशुल्क
वर्ष : 01, अंक : 05
झारखंड संस्करण
UDYAM-JH-19-0000800

khorthajharnews@gmail.com

डिजिटल संस्करण

भ्रष्टाचारियों पर प्रवर्तन निदेशालय (ED) का एक्शन

प्रणय प्रबोध पाठक,रॉंची

इन दिनों ईडी की कार्रवाई से पूरे देश में हड़कंप मचा हुआ है। बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल समेत देश के कई राज्यों में ईडी की धमक है। सुबह–सुबह टीवी खोलते ही RAID का नजारा सामने होता है। कभी किसी कारोबारी के घर ईडी की दबिश बढ़ जाती है, तो कभी राजनेताओं के घर ईडी की छापेमारी देखी जाती है। नेता मंत्रियों की तो बात ही अलग है, लेकिन आला अधिकारियों के घर भी ईडी की रेड पड़ना सिस्टम पर सवाल खड़े करता है।

प्रवर्तन निदेशालय यानी की ईडी के एक्शन के संबंध में जानना जरूरी है। प्रवर्तन निदेशालय की नींव कब पड़ी, इसके कार्यालय कहाँ–कहाँ हैं, इसकी कार्यप्रणाली क्या है? तो आइए इन तमाम बिन्दुओं पर विस्तार से जानकारी लेते हैं –

ED क्या है

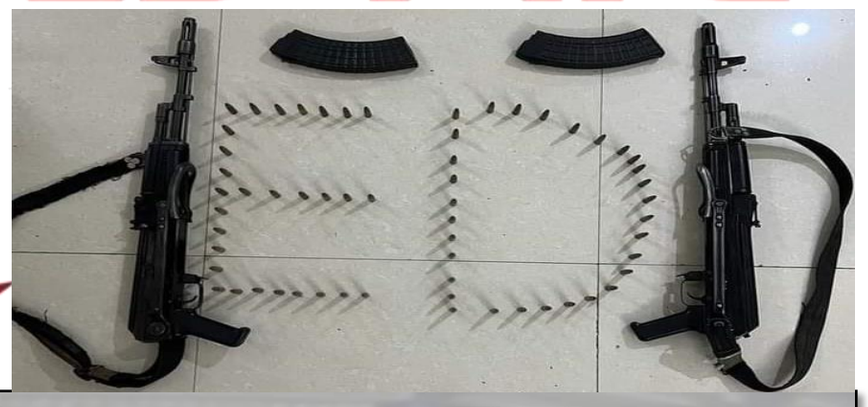

मुख्य बिन्दु :

FERA - Foreign Exchange Regulation Act, 1947
FEMA - Foreign Exchange Management Act, 1999
PMLA - Prevention of Money-laundering Act, 2002
FEOB - The Fugitive Economic Offenders Act, 2018
COFEPOSA - The Conservation of Foreign Exchange and Prevention of Smuggling Activities Act, 1974

प्रवर्तन निदेशालय की स्थापना

प्रवर्तन निदेशालय की स्थापना 01 मई 1956 को मानी जाती है। जब विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम, 1947 (FERA) के अंतर्गत विनिमय नियंत्रण विधियों के उल्लंघन को रोकने के लिए आर्थिक कार्य विभाग के नियंत्रण में 'प्रवर्तन इकाई' गठित की गयी थी। विधिक सेवा के एक अधिकारी प्रवर्तन निदेशक के रूप में इस इकाई के मुखिया थे। जिनके संरक्षण में यह इकाई भारतीय रिजर्व बैंक से प्रतिनियुक्ति के आधार पर एक अधिकारी और विशेष पुलिस स्थापना से तीन निरीक्षकों की सहायता से काम करती थी। वर्ष 1957 में इस इकाई का दोबारा नामकरण किया गया, तब से यह 'प्रवर्तन निदेशालय' के रूप में जाना जाता है। जिसे अंग्रेजी में Enforcement Directorate कहा जाता है।

फेरा,फेमा और पीएमएलए

विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम, 1947, जिसे FERA । के नाम से भी जाना जाता है। इसके उल्लंघन को रोकने के लिए प्रवर्तन इकाई का गठन किया गया था। 1973 में इस अधिनियम में संशोधन किया गया था। आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया के चलते फेरा, 1973 को निरसित कर दिया गया और इसकी जगह पर विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999, जिसे FEMA । के नाम से जाना जाता है को लागू किया गया। 01 जून 2000 को फेमा अस्तित्व में आया। बाद में, जारी की गयी है। अंतरराष्ट्रीय धन शोधन व्यवस्था के अनुरूप एक नया कानून धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 बना। जिसे PMLA का नाम दिया गया। प्रवर्तन निदेशालय को 07 जुलाई 2005 से पीएमएलए को प्रवर्तित करने का दायित्व सौंपा गया। पीएमएलए में अबतक दो बार संशोधन किए जा चुके हैं, जिसकी अधिसूचना वर्ष 2009 और वर्ष 2013 में

प्रवर्तन निदेशालय की सामान्य जानकारियां

प्रवर्तन निदेशालय सरकारी संस्था है, जो कि भारत सरकार के वित्त मंत्रालाय और राजस्व विभाग के अंतर्गत संचालित है। प्रवर्तन निदेशालय के निदेशक संजय कुमार मिश्रा हैं, जो कि एक आईआरएफ हैं। निदेशालय का मुख्यालय प्रवर्तन भवन, ए.पी.जे, अब्दुल कलाम रोड, नई दिल्ली में स्थित है।

प्रवर्तन निदेशालय के कार्यालय

प्रवर्तन इकाई के गठन के बाद भारत के मुंबई और कोलकता में दो कार्यालय थे। प्रवर्तन निदेशालय के गठन के बाद मद्रास में एक और शाखा की स्थापना हुई। वर्तमान में ईडी के पाँच क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई, चेन्नई, चंडीगढ़, कोलकाता और दिल्ली में हैं। निदेशालय के उप क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर, कोझीकोड, इंदौर, मदुरै, नागपुर, इलाहाबाद, रायपुर, देहरादून, रांची, सूरत, शिमला में हैं। जिनके प्रमुख उप निदेशक हैं। इसके अलावा अहमदाबाद, बंगलौर, कोच्ची, पणजी, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, जालंधर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई,पटना और श्रीनगर में भी ईडी के कार्यालय हैं। जिनके प्रमुख संयुक्त उप निदेशक हैं।

प्रवर्तन निदेशालय के कार्य

फेमा 1999, पीएमएलए 2002, कोफेपोसा 1974, FEOB 2018 के प्रावधानों के उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करना प्रवर्तन निदेशालय का मुख्य काम है। पीएमएलए के प्रावधानों के अंतर्गत धनशोधन और परिसंपत्तियों के प्रत्ययन के संबंध में अन्य देशों को सहयोग कराना और इन मुद्दों पर सहयोग प्राप्त करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करना ईडी का काम है। इसके अंतर्गत अर्द्ध न्यायिक जांच प्रक्रिया के दौरान उल्लंघन सिद्ध होने की स्थिति में संबंधित व्यक्ति/फर्म/इकाई के विरूद्ध विधिसम्मत कार्रवाई का प्रावधान है।

बीते कई माह से झारखंड्, बिहार, बंगाल समेत कई राज्यों में प्रवर्तन निदेशालय की टीम छापेमारी कर रही है। छापेमारी के दौरान ईडी की टीम को सफलता भी मिली है। कई रसूखदार लोगों के घरों से छापेमारी के दौरान करोड़ों रुपए कैश बरामद हुए हैं। इन दिनों ईडी की कार्रवाई जारी है और भ्रष्टाचारियों में हड़कंप का माहौल है।

झारखण्डियों को मिली 1932 की पहचान

आकाश सरोज, संवाददाता

रांची : रांची के प्रोजेक्ट भवन में कैबिनेट की विशेष बैठक हुई. इस बैठक में कुल 43 प्रस्तावों पर मुहर लगी. इन सभी प्रस्तावों में से हेमंत कैबिनेट का जो सबसे बड़ा फैसला है वो है '1932 खतियान आधारित स्थानीय और नियोजन नीति को मंजूरी', 'आंगनबाड़ी सेविका–सहायिकाओं की मांग पर मुहर' और 'ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण'. ये तीनों मांगें ऐसी थी, जिनकी लंबे समय से मांग चल रही थी. खासकर '1932 खतियान आधारित स्थानीय और नियोजन नीति'.

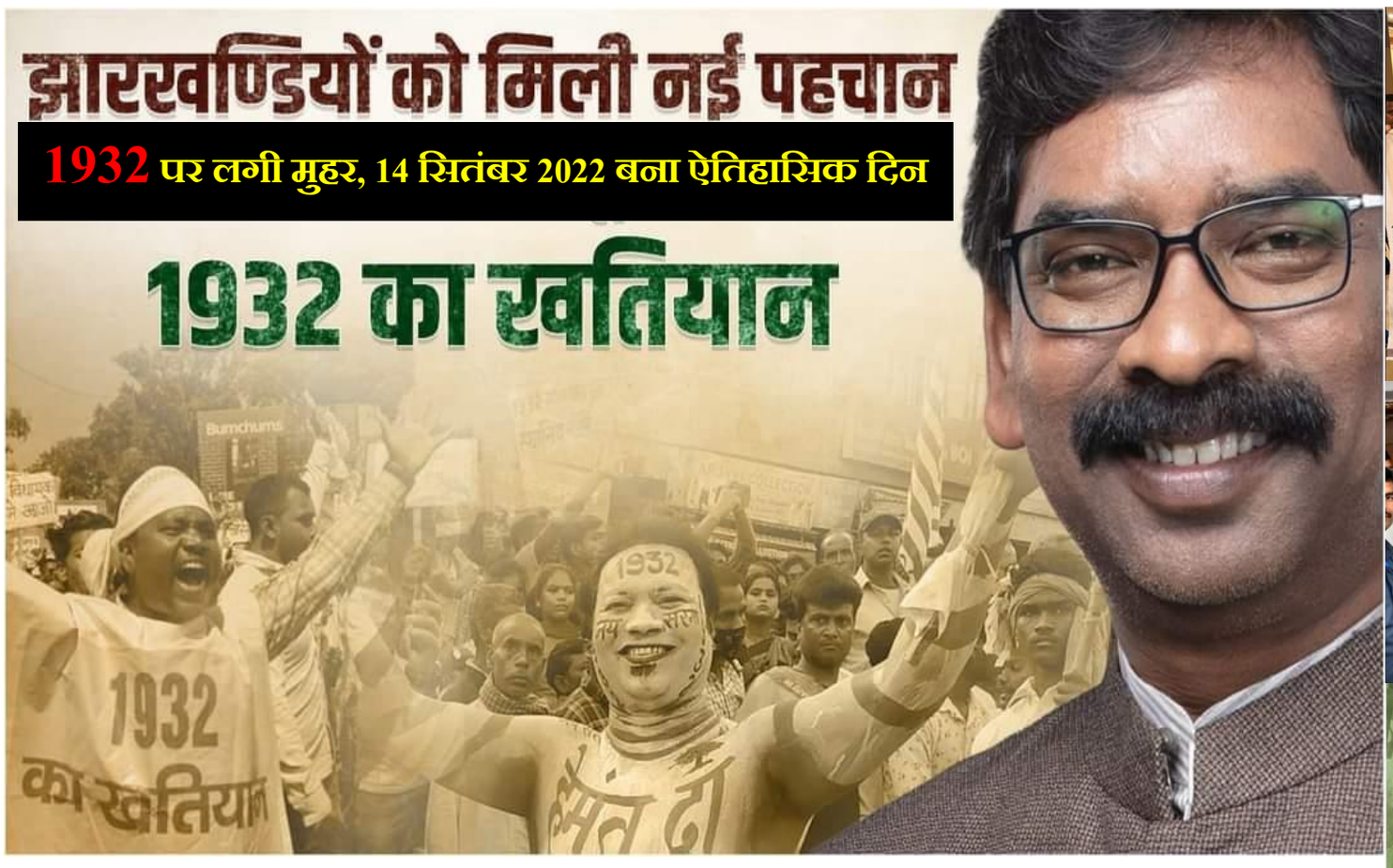

1932 खतियान आधारित स्थानीय– नियोजन नीति

झारखंड में 1932 खतियान आधारित स्थानीय नीति और नियोजन नीति की मांग एक लंबे अरसे से चल रही थी. राज्य की जनता की इस मांग को देखते हुए हेमंत कैबिनेट ने इस पर मुहर लगा दी. इसके तहत झारखंड में 1932 या उससे पूर्व के सर्वे के आधार पर रह रहे लोगों को झारखंड का स्थानीय माना जाएगा. वहीं, अगर किन्हीं के पास अगर जमीन है और खतियान नहीं तो ग्राम सभा के माध्यम से पहचान कर उसे स्थानीय का दर्जा दिया जाएगा. हालांकि, अभी रास्ता लंबा है. अभी छत चढ़ने के लिए कई और सीढ़ियां चढ़नी है. अब इस विधेयक को भारत सरकार के समक्ष पेश किया जाएगा. भारत सरकार की स्वीकृति के बाद ही झारखंड में 1932 खतियान आधारित स्थानीय नीति और नियोजन नीति लागू हो पाएगी. राज्य सरकार इसे विधानसभा से पारित कराने के बाद 9वीं सूची में शामिल कराने के लिए केंद्र को प्रस्ताव भेजेगी।

आंगनबाड़ी सेविका– सहायिकाओं को सीएम हेमंत की सौगात

हेमंत कैबिनेट में एक बड़ा फैसला लेते हुए आंगनबाड़ी सेविका– सहायिकाओं को बड़ी राहत दी है. राज्यभर की आंगनबाड़ी सेविका–सहायिकायें पिछली सरकार से ही मानदेय बढ़ाने समेत कई मांगों को लेकर धरनारत थी. इसे देखते हुए हेमंत कैबिनेट ने राज्यभर की 77 हजार आंगनबाड़ी सेविका– सहायिकाओं के मानदेय में वृद्धि करने का फैसला लिया है. इसके तहत मानदेय में वृद्धि करते हुए आंगनबाड़ी सेविकाओं को 9500 और आंगनबाड़ी सहायिकाओं को 4750 रूपये मानदेय दिये जाने का फैसला लिया गया है. साथ ही हर साल इनकी मानदेय राशि में 500 रूपये की बढ़ोतरी होगी. इसके अलावा 6 फीसदी ईपीएफ की व्यवस्था, अनुकंपा की नौकरी, 62 साल तक नौकरी की गारंटी, दुर्घटना बीमा, भविष्य सुरक्षा, 18 दिनों का अवकाश, 180 दिनों का मातृत्व अवकाश और 15 दिनों की सवैतनिक अवकाश, अपील की व्यवस्था, समय पर मानदेय और पोषाहार की व्यवस्था जैसे लाभ दिए गए हैं.

ओबीसी को 27 फीसदी आरक्षण

झारखंड में ओबीसी को 27 फीसदी आरक्षण दिए जाने की भी मांग भी लंबे समय से चल रही थी. हेमंत कैबिनेट की 14 सितंबर को हुई विशेष बैठक में ओबीसी की मांग पर मुहर लगाते हुए कुल 27 फीसदी आरक्षण देने का फैसला लिया. इसके तहत राज्य में कुल 77 फीसदी आरक्षण हो गए. इनमें से एसटी को 28 फीसदी, एससी को 12 फीसदी, ओबीसी को 27 फीसदी, इनमें से अत्यंत पिछड़ा को 15 फीसदी एवं पिछड़ा को 12 फीसदी और इडब्ल्यूएस को 10 फीसदी आरक्षण मिलेगा. राज्य सरकार इसे विधानसभा से पारित कराने के बाद 9वीं सूची में शामिल कराने के लिए केंद्र को प्रस्ताव भेजेगी।

हरियाली,सादगी और खनिज संपदा से परिपूर्ण झारखंड राज्य की गाथा

विशाल भारद्वाज

राँची : 'झारखंड राज्य' एक ऐसा राज्य जिसके नाम में ही राज्य की विशेषताएं छिपी हुई है। ष्झारष् शब्द का अर्थ है श्जंगलश और ष्खंडष् का अर्थ श्भूमिश है। इस प्रकार 'झारखंड' का अर्थ श्वन भूमिश है। छोटानागपुर पठार में बसा होने के कारण इसे छोटानागपुर प्रदेश भी बोलते हैं। झारखण्ड को जंगलों का प्रदेश भी कहा जाता है। झारखंड में खनिजों का भरपूर भंडार है। झारखंड राज्य का विस्तार पूर्व, पश्चिम ,उत्तर ,दक्षिण चारों दिशाओं में क्रमशः बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा और बंगाल राज्य की सीमाओं तक फैला हुआ है। झारखंड में धनबाद, बोकारो और जमशेदपुर इन शहरों में औद्योगिक विकास बहुत ज्यादा है, इसलिए इन शहरों को बड़े शहरों के रूप में शामिल किया गया है। 15 नवंबर 2000 को झारखंड बिहार से कटकर अलग राज्य के रूप में स्थापित हुआ। आज राज्य को बने 22 वर्ष हो चुके हैं।

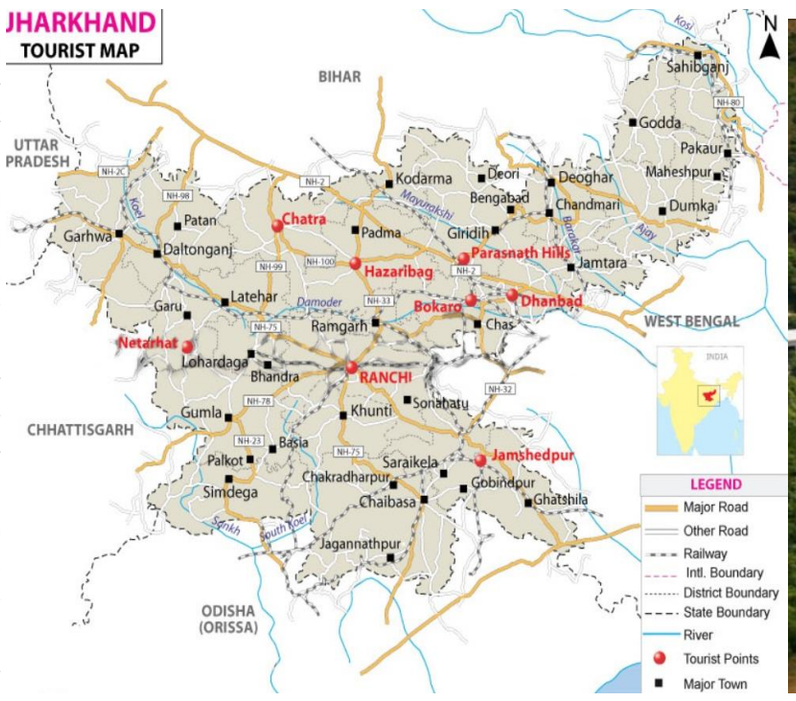

झारखंड में बहुत ही सुंदर जलवायु है क्योंकि चारों तरफ हरियाली और पेड़ पौधे हैं। इसलिए ही अधिक वन संपदा के होने के कारण यहाँ की जलवायु और वातावरण सभी लोगों को अपनी और आकर्षित करता हैं। इसके साथ कोयला और अभ्रक की खाने है। यहां के जंगलों में विभिन्न प्रकार के पेड़ और उनकी सुखी लकड़ियां, फलों से लदे हुए वृक्ष, फूलों पर बैठी हुई तितलियां और बहुत ही दर्शनीय नदी, यहाँ के मनमोहक मैदान, पर्वत ,पहाड़ और भोले भाले आदिवासी समुदाय के लोग और इसके साथ बहुत सुंदर–सुंदर वहां की घाटियां और उन में बहने वाले झरने सभी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसीलिए झारखंड भारत का ही नहीं, बल्कि विश्व के लोगों के लिए भी यह आकर्षण का केंद्र है। इसके बावजूद हमारा राज्य झारखंड कई प्रमुख समस्याओं से घिरा पड़ा है। झारखंड में गरीबी की स्थिति अभी बनी हुई है, क्योंकि राज्य की 33% आबादी गरीबी रेखा के नीचे ही अपना जीवन गुजार रही है। 25% बच्चे कुपोषण और भुखमरी के शिकार हैं। इसके अलावा झारखंड की सबसे बड़ी समस्या श्नक्सलवादश है। यहां पर आज भी कई जिले नक्सली गतिविधियों से प्रभावित हैं। इसके अलावा नगरों का विकास बहुत धीमी गति से हो रहा है और किसानों की समस्याएं तो आम है। इन समस्याओं के बावजूद झारखंड खनिज–संपदा से परिपूर्ण है। कोयला, कच्चा लोहा,चूना ,पत्थर ,तांबा ,बॉक्साइट, चीनी मिट्टी, डायनामाइट, डोलोमाइट, ग्रेफाइट, बोटो नाइट ,साबुन पत्थर, बिल्लोरी रेट और सिलिका बालू आदि प्रमुख खनिज हैं। जमशेदपुर में टाटा स्टील प्लांट है। यहां पर सीमेंट, स्टील और अन्य कई कल–कारखाने संचालित हैं। जिससे लोगों को रोजगार नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

झारखंड राज्य जब से नए राज्य के रूप में बना है यह बहुत खुशी की बात रही है, परंतु नए राज्य के रूप में 22 साल होने के बाद भी यहां पर सही तरीके से विकास कार्य नहीं हो पा रहा है,जिसके कारण जनता को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। राज्य में अपराध,अशिक्षा, कुपोषण, नक्सलवाद ,बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है। जरूरत है सरकार को जागरूक होकर काम करने की। इसके साथ–साथ लोगों को भी बहुत जागरूक होना पड़ेगा । तभी हमारा राज्य एक समृद्ध और खुशहाल राज्य बन सकता है। वहीं जिस प्रकार हेमंत कैबिनेट ने 1932 का खतियान राज्य में लागू करने व ओबीसी को 27% आरक्षण के प्रस्ताव को मंजूरी दी है यह हेमंत सरकार के सकारात्मक राजनीति को दर्शाता है। जरूरत है राज्य सरकार को राज्यहित में फैसला लेकर राज्य की चहुविकास करने की।

जानिए क्यों मनाया जाता है विश्व साक्षरता दिवस और कब हुई इसकी शुरुआत

आलोक मिश्र, संवाददाता

राँची : शिक्षा हर किसी के जीवन में खास महत्व रखता है। समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने के उद्देश्य से विश्व साक्षरता दिवस भारत में बड़े स्तर पर मनाया जाता रहा है। वहीं भारत का सर्व शिक्षा अभियान इस दिशा में सराहनीय कदम है। विश्व साक्षरता दिवस 8 सितंबर को मनाया जाता है। पहला अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस साल 1966 में मनाया गया था। में पहली बार साक्षरता दिवस मनाना शुरू हुआ।

साक्षरता दिवस क्यों मनाया जाता है

राष्ट्र और मानव विकास के लिए समाज के हर वर्ग के लोगों के लिए उनके अधिकारों के बारे में जानना महत्वपूर्ण हैं। इसी ज्ञान के लिए शिक्षा दी जाती है। लोगों को शिक्षा की ओर प्रेरित करने के लक्ष्य के तहत साक्षरता दिवस मनाया जाता है। जिसमें विश्व के तमाम देश वयस्क शिक्षा और साक्षरता की दर को बढ़ाने के लिए इस दिन को खासतौर पर मनाते हैं।

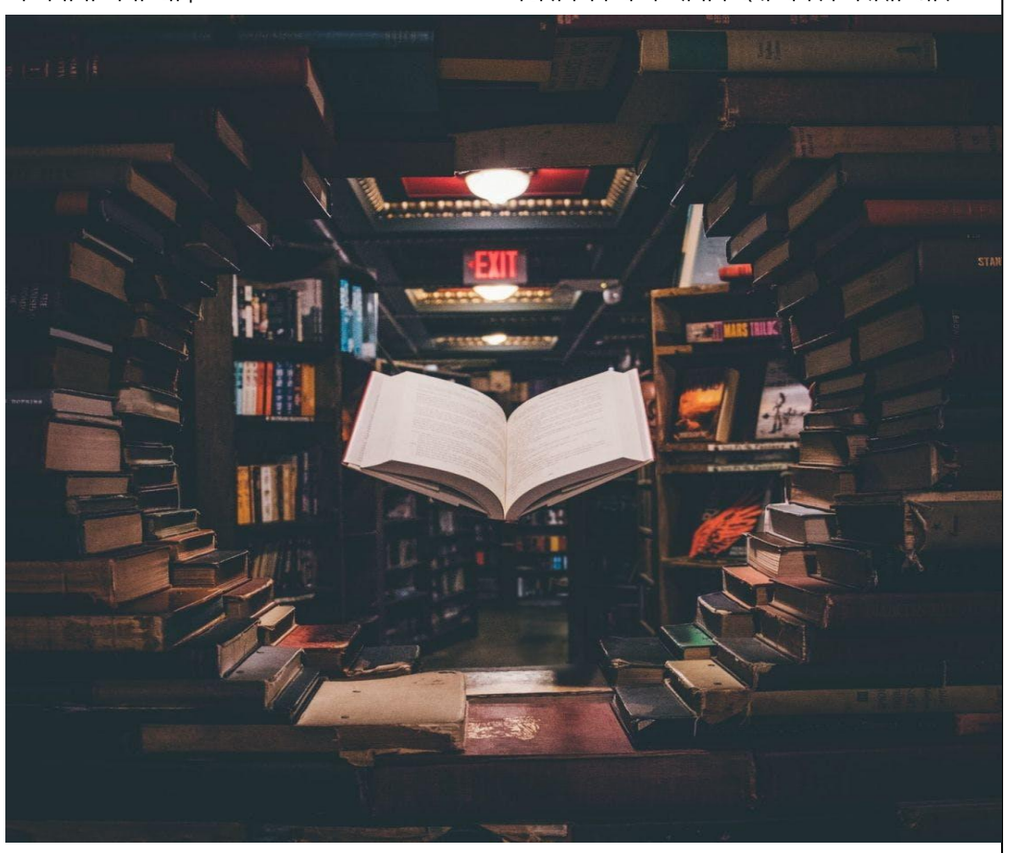

साक्षरता क्या है

साक्षरता शब्द श्साक्षरश से आया है, जिसका अर्थ होता है, श्पढ़ने और लिखनेश में श्सक्षम।श विश्व के सभी देशों में समाज के हर वर्ग तक शिक्षा के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से इस दिन की शुरुआत की गई।

साक्षरता दिवस का इतिहास

पहली बार यूनेस्को ने 7 नवम्बर 1965 को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाने का फैसला लिया। इसके लिए एक दिन निर्धारित किया गया। जिसके बाद हर साल 8 सितम्बर को विश्व साक्षरता दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। यूनेस्को के निर्णय के अगले ही साल यानि 1966

भारत की साक्षरता

भारत की साक्षरता दर विश्व साक्षरता दर से 84 फीसदी कम है। साल 2011 में भारत की कुल साक्षरता दर 74.4% थी। 1947 में देश की साक्षरता मात्र 18 % थी। वहीं देश में सबसे अधिक साक्षरता वाला राज्य केरल है जहां 93% जनसंख्या साक्षर है। इसमें पुरुष साक्षरता 96% है और महिलाओं की साक्षरता दर 92% है। सबसे कम साक्षरता वाला राज्य बिहार है, जहां 63.82% लोग साक्षर हैं। उत्तर प्रदेश पांच सबसे कम साक्षरता वाले राज्यों की श्रेणी में आता है।

भूत-वर्तमान और भविष्य को सुरक्षित करने का पर्व : जिउतिया

'आए गेलो बुढ़ियन के पारी,,हो जितिया परब भारी'

ये गीत मन को रोमांचित कर देता है। इस गीत में पुरे जितिया पर्व का वर्णन गाया जाता है।

अनिता महतो,शिक्षिका,विष्णुगढ़

आश्विन मास मे पितृ–पक्ष के लग जाने के कारण जहाँ एक तरफ सभी शुभ कार्य लगभग वर्जित होते है वहीं दूसरी तरफ झारखंड, बिहार ,बंगाल ,छत्तीसगढ़, उड़िसा और आसाम के छिटपुट क्षेत्रों में जिउतिया का पर्व मनाया जाता है।यह नौ दिवसीय त्यौहार जिउतिया अपने आप में अत्यंत ही अनोखा है।ये त्यौहार अलग अलग क्षेत्रों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है जैसे– जिउतिया व्रत/जितिया व्रत/जिवितपुत्रिका व्रत आदि। कहते हैं यह व्रत ग्राम समाज में सदियों से चली आ रही है।जो अब अलग–अलग छोटे बड़े क्षेत्रों तक जा पहुँचा है।

इस त्यौहार को दो दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण माना जाता है सबसे पहला तो ये कि अष्टमी के प्रतिपदा (प्रथम) तिथि से ही अपने पितरों की आत्म शान्ति हेतु किसी नदी या सरोवर के किनारे अपने केश त्याग कर (मुंडन करवाकर) तत्पश्चात स्नान आदि करके सफेद वस्त्र धारण कर अपने पितरों को जल,जलपान, प्रशाद आदि अर्पित कर उनके आत्मा की शांति की प्रार्थना करत है और अपने पितरों के प्रति प्रेम और पश्चाताप का भी उद्गार प्रकट करते हैं।

इस त्यौहार का दूसरा और महत्वपूर्ण दृष्टिकोण यह है कि इसमें माताओं के द्वारा अष्टमी तिथि को अखंड निर्जला व्रत रखा जाता है और अपने पुत्र–पुत्रियों के लम्बी उम्र ,अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि से परिपूर्ण जीवन की प्रार्थना की की जाती है।

यह पर्व युँ तो आश्विन प्रतिपदा तिथि से ही शुरु माना जाता है जिसमें अपने पूर्वजों के प्रति उद्गार हेतु माँस–मछली वर्जित होता है परंतु सप्तमी ,अष्टमी, नवमी तिथि मुख्य माना जाता है.. अर्थात संयत उपवास तथा पारण ।गृहस्थ जीवन में इस पर्व को कठिन परंतु आवश्यक माना गया है,और हो भी क्यों न!ये अत्यंत फलीभूत होने वाला तथा आत्मसंतोष देने वाला पर्व है,इस पर्व में में भी करम पर्व की भाँति अखरा में डार्इ (डाली) गड़ाता है फर्क बस इतना है कि इसमें सात प्रकार के पेड़ो के डाल होते हैं जैसे –केले का थाम्बा जंगली बाँस,ईख,भेलवा,जोगिया परास,पाँकेर जिसे खेती किसानी के काम में आने वाले डोहड़ा के

सहारे पाहन या घर के बड़े बुजुर्ग के द्वारा अखरा पूजा करके गाड़ा जाता है जिसके समक्ष गोलाई में बैठकर, अपनी समस्त मनोकामनाएं लेकर माताएं अपने पूरे मनोभाव से पूजा करती है और रातभर जागकर झूमर नाचती गाती है।इनके पूजन थाल करम के थाल के भाँति ही सजे होते है,कोई फर्क नहीं होता,वही अक्षत–सिंन्दूर,वही धान फूल, बेलंजन,वही घी दीया अरवा सूता और वही खीरा बेटा, बस पूजन के भाव बदल जाते हैं।

इस संदर्भ में एक कथा बड़ी ही मार्मिक कथा प्रचलित है कि एक माता किसी बड़े जमींदार के यहाँ काम करती थी,उसके यहाँ प्रतिदिन खाने में तरह तरह के व्यंजन बनते थे।एक दिन उसके छोटे से बालक ने भी व्यंजनों से भरी थाली देख ली और माँ से खाने की जिद्द करने लगा।मगर जमींदार ने उसकी एक नहीं सुनी,और माँ–बेटे को खूब फटकार लगाई। तब बच्चे का बालमन फफक–फफककर रोने लगा।माँ से रहा न गया।वह बच्चे को चुप कराते हुए बोली–बेटा !मैं भी तुम्हारे लिए जितिया के दिन सात प्रकार के व्यंजन बनाउंगी,तुम जी भरकर खाना। और बच्चा चुप हो गया। कहते है– इसिलिए इस त्यौहार में मिष्ठान्न की कोई जगह है इसमें दाल–भात और सात प्रकार की सब्जियां ही प्रसाद होती हैं ,जैसे चना,सतपुतिया झिंगा,अरबी,टोटी,कोहड़ा और विशेष साग जिसे पोय साग कहते है,को घी में सात्विक रुप से बनाकर नवमी को अहले सुबह अपने पितरों को दोने में अर्पित कर,कुटुम्ब जनो को बाँटकर खाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि जिसकी माँ जितिया करती है उसक कोई भी बाल बाँका नहीं कर सकता।हर बला टल जाती है।

माताओं की यह निर्जला तपस्या कभी खाली नहीं जाता।यह पर्व भूत–वर्तमान तथा भविष्य तीनों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला पर्व है,जिसमें सबके समृद्धि की कामना की जाती है।

दाइल–भात सात गो तरकारी,, हो जितिया परब भारी।

देवा–भूता फरकें ओहारी,, हो जितिया परब भारी।

आए गेलो बुढ़ियन के पारी,,हो जितिया परब भारी।

दशम फॉल की वादियों में सुनाई देती है बांसुरी की मीठी आवाज : अधूरी प्रेम कहानी

आज भी सुनाई देती है दशम फॉल की वादियों में छैला की बांसुरी

ओम प्रकाश कुमार , राँची

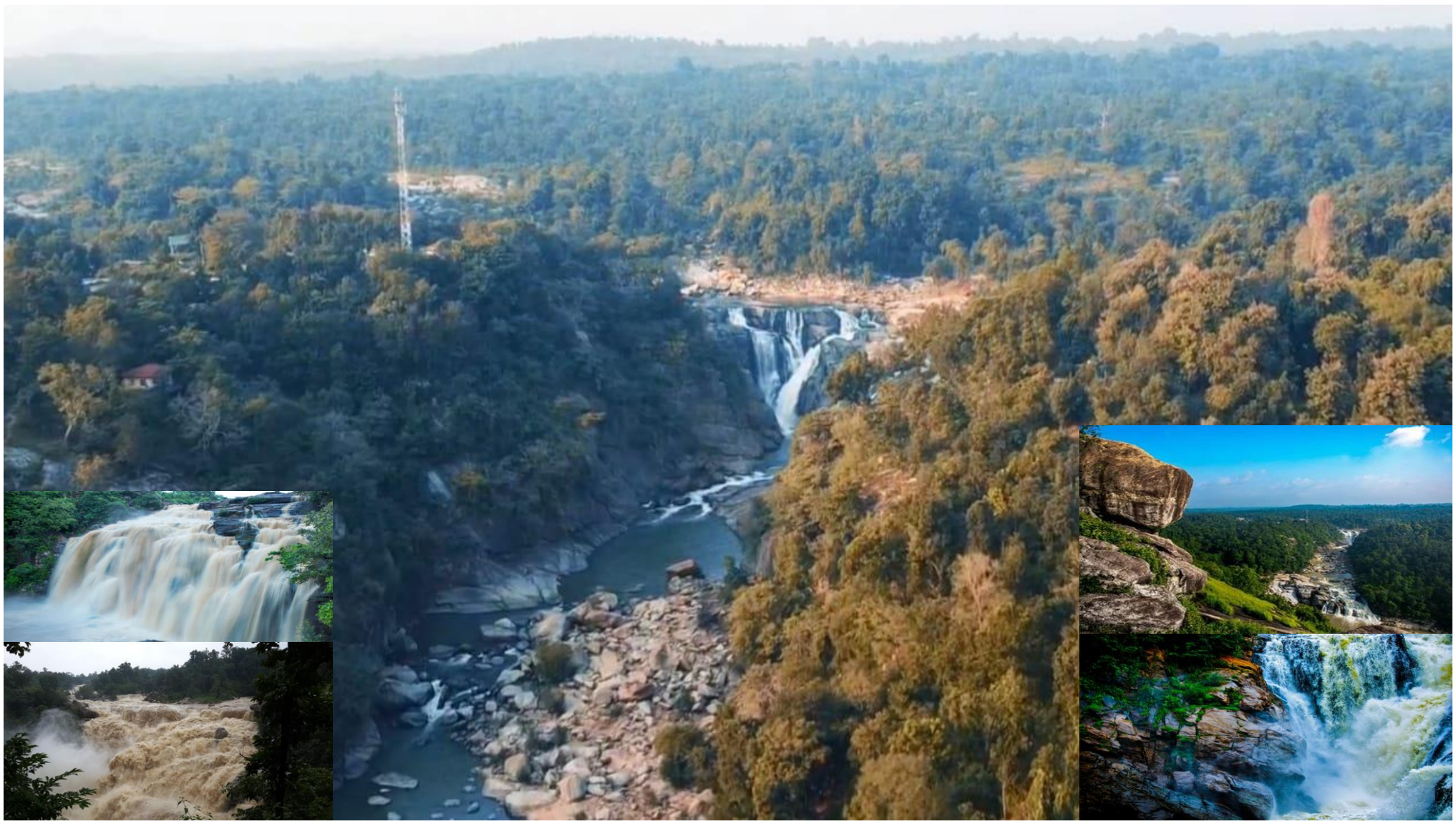

दुनिया में कई ऐसी प्रेम कहानियां हैं, जिन्हें आज भी उदाहरण के रूप में याद किया जाता है। झारखंड की एक ऐसी प्रेम कहानी, जो आज कहीं गुम हो गई है, जिसके बारे में हम आपको बताएंगे। किताबों के कुछ पन्नों में सिमटी यह कहानी कांची नदी के दशम जलप्रपात की है। जी हाँ, हम उसी दशम फॉल की बात कर रहे हैं, जिसकी गहराईयों में एक प्रेमी जोड़े की कहानी समायी है।

झारखंड के प्रमुख जलप्रपातों में से एक

झारखण्ड एक सुन्दर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को अपने आंचल में समेटे है। यहाँ अनेकों मंदिर, झरने, डैम और पर्यटन स्थल हैं। उन्हीं में से एक है– दशम जलप्रपात (वेंउ थ्संस), जो राँची के घने जंगलों और प्राकृतिक छटाओं के बीच अवस्थित है। इन्हीं प्राकृतिक छटाओं के बीच यह जलप्रपात रांची से करीब 40 किलोमीटर दूर रांची–टाटा मुख्य मार्ग पर तैमारा गांव के पास दक्षिण–पूर्व में कांची नदी पर स्थित है। यह जलप्रपात करीब 144 फीट की उंचाई से गिरता है। चारो तरफ से जंगलों और पहाड़ों से घिरा यह जलप्रपात काफी आकर्षक नजर आता है। दस धाराओं से छल–छल, कल–कल करते पत्थरों से टकराती धाराओं का विहंगम दृश्य आंखों में समा जाता है। उन्हीं धाराओं के बीच से निकलती पानी के फुहारे काफी मनमोहक और आनंदमय होती हैं। इन्हीं धाराओं में बहती है दो प्रेमियों की अधूरी प्रेम कहानी।

दशम फॉल का नाम दशम कैसे पड़ा ?

दशम जलप्रपात का असली नाम 'दारूसोम' है। जिसकी उत्पति मुंडारी भाषा से मानी जाती है। मुंडारी भाषा में 'दारू' का अर्थ 'पानी' है और 'सोम' का अर्थ 'उढेलना' या 'जमाव' होता है। इन्हीं दो शब्दों के मेल से इस स्थान का नाम 'दारूसोम' पड़ा। लेकिन धीरे–धीरे इसका नाम 'दारूसोम' से 'दशम' में बदल गया और यह दशम आम बोलचाल की भाषा में 'दशम फॉल' के नाम से जाना जाने लगा।

तो कुछ लोगों का मानना है कि मुण्डारी भाषा में पानी को श्दाअश और स्वच्छ को श्सोअश कहते हैं, जिसका मतलब होता है– झरने से गिरता हुआ निर्मल जल। स्वच्छ जल का झरना पहले श्दाअ सोअश फिर से श्दासोमश और अंत में श्दशम श में परिवर्तित हो गया। यहाँ की स्थानीय भाषा में लोग इसे 'दासोम' के नाम से ही जानते हैं।

क्या है दशम फॉल की रहस्यमयी कहानी

झारखंड की हरी–भरी वादियों में भी कभी प्रेम की अनुगूंज सुनायी दी थी। हीर–रांझा, लैला–मजनू की तरह ही झारखंड प्रदेश के तमाड़ स्थित श्बागुरा पीड़ीश नाम के गांव में छैला–संदू नामक युवक आज भी इलाके में चर्चा का विषय बना हुआ है। छैला दो भाइयों में छोटा भाई था। किसी कारण से छेला के बड़े भाई का निधन हो जाता है। जिसके बाद छैला अपनी भाभी के साथ रहने लगा। छैला काफी रंगीला, मेहनती, ईमानदार और रसिक मिजाजी था। जो कि नाचते–गाते और झूमते दिखायी देता था। उसके दोनों हाथों में बाँसुरी, गर्दन में मांदर और सिर पर मोर का पंख, पैर में घुंघरू और कंधे में एक मुर्गा रहा करता था।

एक बार उन्हीं घने जंगलों के बीच पास के गांव श्पाक सकमश में भादों नाच हो रहा था। नाचने–गाने में माहिर छैला–भादों नाच खेलने पास के गांव जाने लगा। लेकिन बीच में कांची नदी में स्थित दशम जलप्रपात आता था। दाशोम फॉल (दशम फॉल) की गहराई अधिक होने के कारण छैला श्बंदुश नामक लता (लत्तर) का सहारा लेता था, जो फॉल के इस पार से उस पार तक तनी हुई थी। गांव श्पाक सकमश में एक बिंदी नाम की लड़की रहती थी। भादों नाच–गान के दौरान छैला को बिंदी से बेइंतहा प्यार हो जाता है। फिर छैला रोजाना दिनभर का काम खत्म करने के बाद शाम के समय बांसुरी, मांदर और कंधे पर मुर्गा लेकर अपनी प्रेमिका से मिलने उसके गांव निकल पड़ता था। दोनों गावों के बीच घने जंगल और पहाड़ियों के बीच काफी गहरा जल प्रपात को उसी लत्तर के सहारे पार कर अपनी प्रेमिका के पास पहुंचता। रात भर बाँसुरी की धुन, मांदर की थाप पर छैला और बिंदी थिरकते रहते। नाचने से मन भर जाता, तो भोर तक बातें करते। भोर होते ही मुर्गा बाग देना शुरू करता, जिससे छैला को पता चल जाता कि सुबह होने को है। फिर धीरे–धीरे छैला अपने घर की ओर चल पड़ता, यह बात उसकी भाभी को रास नहीं आयी। वह सोचने लगी कि इस दुनिया में देवर के अलावा और मेरा है ही कौन? यह घर पर ही रहता तो क्या होता? यह सोच कर मन में काफी तकलीफ होती थी। लोगों ने भी कई तरह की बातें कहनी शुरू कर दी कि छैला दूसरे गांव में जाकर रात भर नाचता–गाता रहता है। यह सब सुनकर संधू की भाभी काफी परेशान रहने लगी।

एक दिन भारी बारिश होती है, नदी बाढ़ के पानी से भर जाता है। रोज की तरह उस दिन भी संधू अपने दिनभर का काम खत्म कर शाम होते ही अपनी प्रेमिका से मिलने दूसरे गांव निकाल पड़ता है। संधू के नदी पार हो जाने के बाद उसकी भाभी (जिस लत्तर के सहयोग से संधू पार होता था) उस लतर को दूसरे तरफ नीचे की ओर काट देती है। रोजाना की तरह छैला नाच–गान खत्म करके वापस अपना घर आने लगा। अनजाने में उस अधकटी लता के सहारे फॉल पार करने लगा। जैसे ही वह बीच में पहुंचा, लता टूट गई और छैला दाशोम फॉल में हमेशा के लिए समा गया। उसका मुर्गा उड़कर एक सखुआ के पेड़ में बैठ जाता है। मुर्गा के पैर में रस्सी बंधे होने के कारण मुर्गा उसी पेड़ में फंस जाता है और दम तोड़ देता है। उस दिन से उस जगह को तुलसंडी गांव के नाम से जाना जाने लगा। फॉल के जिस जगह पर संधू के डूबने से मृत्यु हुई थी, उस स्थान को छैला संदू 'दह' के नाम से जाना जाने लगा। गांव के लोगों का कहना है कि आज भी इस दाशोम फॉल से छैला–संदू की मांदर की थाप और बांसुरी की आवाज सुनाई पड़ती है।

धर्म रीति–रिवाज

पुराने परंपराओं के अनुसार इस स्थान को धर्म रीति–रिवाजों से भी जोड़ कर देखा जा सकता है। ऐसा इसलिए कि यदि जाने–अनजाने में हादसा (गहरायी में डूबने से मृत्यु) होती है, तो उस स्थान पर मुर्गा का बिना बली दिए शव नहीं मिलता है। स्थानीय लोगों की मानें, तो छैला सिंधु और बिंदी की प्रेम टूट जरूर गई, लेकिन खत्म नहीं हुई है। आज भी कभी–कभी दाशोम फॉल से छैला–सिंधु की बांसुरी की धुन, मांदर की थाप और मुर्गा की बांग सुनाई पड़ती है। मानो छैला–सिंधु अपनी प्रेमिका के साथ बांसुरी की धुन और मांदर की थाप पर थिरक रहे हों।

पर्यटकों की जानकारी के लिए

वर्तमान समय में भी नदी के उस स्थान पर इतनी गहराई है कि उसे मापना संभव नहीं। घूमने आए पर्यटकों को उधर जाने से रोक दिया जाता है। क्योंकि जाने–अनजाने में घटना–दुर्घटना होने की संभावना बनी रहती है। दुर्घटना के आंकड़े निरंतर बढ़ने लगे, तब पर्यटन विभाग ने संज्ञान लेकर सुंदरीकरण का बीड़ा उठाया और देखरेख के लिए **पर्यटक मित्र** बनाए गए। जो कि अधिकतर स्थानीय लोग ही रहते हैं। जिसके बाद दशम फॉल में मौत की घटनाओं में कमी आयी है। वैसे यहां रोज कोई न कोई रहते हैं। लेकिन ठंड का मौसम पर्यटन के लिए उपयुक्त है। इसलिए दशम जलप्रपात में भी ठंड के दिनों में अधिक पर्यटक आते हैं। रविवार या छुट्टियों के दिन पर्यटकों की संख्या अधिक होती है। फरवरी से अप्रैल के बीच का समय दशम फॉल घूमने के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि 'दशम घाघ' के रूप में भी है। यह झरना खूबसूरत प्राकृतिक छटाओं से घिरा हुआ है। धीरे–धीरे यहां पर्यटकों के आने की संख्या बढ़ रही है और उन्हें कई तरह की सुविधाएं भी मुहैया करायी जा रही हैं।

सावधानियाँ

यहां आने वाले पर्यटकों को सख्त हिदायत दी जाती है कि वह जलप्रपात की धारा में न नहाएं, या नहाते वक्त खास सावधानियां बरतें। दशम फॉल में पर्यटकों को विशेष सावधानी की सलाह दी जाती है क्योंकि जलप्रपात वेग से गिरता है, वहाँ जाना खतरनाक हो सकता है। हां, फॉल के गिरने के बाद जब वह आगे बढता है, तो इसमें नहाया जा सकता है। लेकिन यहां नहाने में बहुत सावधानी की जरूरत है। पानी के वेग से चट्टानों के बीच अनेक खतरनाक गड्ढे बन गये हैं, जो पानी से ढके होने के कारण दिखयी नहीं देते हैं और जहां फंसना जानलेवा साबित हो सकता है। दशम फॉल से निकला पानी आगे करीब 50–60 मीटर जाने के बाद समतल नदी का रूप ले लेता है। बीच–बीच में कहीं–कहीं चट्टान भी मिलते हैं, क्योंकि पूरा छोटानागपुर प्रमंडल ही चट्टानों पर बसा है।

आज भी इतिहासिक अद्भुत रहस्यमयी दशम फॉल की वादियों में, कांची की गहराइयों में समाया छैला की प्रेम, झरना से झर–झर की आवाज, उड़ते फुहारे छैला–संदू और बिंदी की अधूरी प्रेम कहानी का अहसास दिलाती है।

मानो आज भी स्वर्गलोक के देवी–देवता का वास इसी धरती में है और हम उनके दरबार में पहरेदार के रूप में खड़े है।

कविता : बन जाओ अपराजिता तुम

खामोश होकर वो बेटी
कर रही हजारों प्रश्न,
इस काल के चक्र में,
होने लगा क्यों ऐसा भक्षण...

सुनो! हे भारत की बेटियां,
इन नरपिशाचों से मत हो
आतंकित तुम,
अपनी सुकोमल काया को
बना लो काली भैरवी तुम....

शक्ति स्वरूपा! हे चंडमुंड विनाशिनी!
हे महिषासुरमर्दिनी,
ध्वंश करो इन दानवों का,
नहीं बनो अबला तुम...

नहीं हो भोग्या तुम,
नहीं हो पराजिता तुम,
रणचंडी का रूप लेकर,
बन जाओ अपराजिता तुम....

पुष्पा सहायशगिन्नी
रांची, झारखंड

चलो न संग एक किताब लिखते हैं

चलो संग–संग एक किताब लिखते हैं
जिंदगी के सारे हिसाब लिखते हैं
तुम्हारे हर अनकहे सवालों का
जवाब हम देंगे
चलो न कुछ बदलते रिश्तों की
कहानियां लिखते हैं
कुछ टूटे ख्वाब,अधूरे एहसास
जो कह न पाएं, वो जज्बात लिखते हैं
उनकी चालाकियां, अपनी नादानियां
जुबां तक आकर जो रुक गए कभी
पन्नों पर बिखेरकर उन्हें
आज इतिहास रचते हैं
चलो न संग–संग एक किताब लिखते हैं
जिंदगी के सारे हिसाब लिखते हैं

अर्चना तिवारी

विश्व आपनेमरन हटवेक दिन

"काम-काज के माधियम से आसाक निरमान करेक"

हामिन काम-काज के माधियम से आसाक निरमान कइसे करब ?

अनाम अजनबी

लोकवइन तक पहुंचे बा ओखिन से बात करेक

तोहिन ककरो कर परवाह कर हिया ई जाहिर कइर के की तोहिन ककरो कर आसा दियेक में मदइत कइर सकल हथ। हाम सभे ककरो न ककरो रूपें भूमिका निभाय सकल ही एकर से फरक नाइ पड़े हे की ऊ केतना छोटो हइ । हाम ई कधियो नाइ जाने सको ही की जे हाम कर हिये ऊ केतना बदलल आने हे । हामीन सभेक मदइत खातिर लोकेक तक पहुंच सकल ही बा केकरो से बात कइर सकल ही । तोहिन ओकरो ई बतवेक जउरत नाइ हे की ओकरा की करेक हइ बा तोहिन पासे ओकर समस्याक समाधान हइ। आबगा ओकर तनाव वाला अनुभव बा आपनेमरनेक बिचार गुला सुने खातिर ओकरा सवंय बा ठांव दियल से तोहिन ककरो कर मदइत कइर सकल हा । तनिसुन बातें जिनगी बचाय सके हे । आर जे लोक जिनगी में संघर्ष करे लागल हथ। ओकर एगो जुड़ाव महसूस काय सके हे आर उमीदेक आलो जगाय सके हे ।

सझइज के हुब हुलास करा

मदइत मांगले आपनेमरन से जुड़ल कलंक एगो मुइख बाधा हव हइ । हाम आसा कर प्रचार कइर आपनेमरन से जुड़ल आर जुड़ल बातें सकारात्मक बदलाव आइन सको ही जेकर से हाम एगो से बेसी उदार/ललस समाज कर निरमान कइर सको ही जहां जेकरा भी मदइतेक जउरत भेतय ऊ ठाठे बिना संकोच के मदइत माइंग सके । हाम सभे कुछो अइसन कइर सकल ही की हाम अइसन दुनिया में रहिये जहां आपनेमरन के फरीछ करल जाय । आर हाम सभे कुछो अइसन कइर सको ही जेकर से हाम आपनेमरन के रोके में मदइत करे पारब।

आपन तजुरबा के बांटेक

ऊ लोकवइन के भीतरीक समझ आर कहनी जेकरा आपनेमरन कर जीयंत तजुरबा हेल हइ आपनेमरन के बेहतर तरीका से समझेक में दोसर लोकेक खातिर मददगार हय सके हे । आर लोकवइन के दोसरेक सहजोग खातिर उकसावे कइर सके हे । आर लोकवइन के ओकर आपने में मदइत करेक ले आगु आवेक खातिर उकसावेक कइर सके हे । ई वास्तव में ढेइर महत हे कि लोक जे आपन कहनीक जोर–नार कइर रहल हथ । ऊ ई जानइते हतय कि ई कोन तरीका से करेक हइ ताकी ई ऊ लोकेक खातिर आर जे कहनी सुइन रहल हे दुइयोक खातिर सुरछित हवे । लोक कर ढेइर महत भाभना तनावेक अनुभवेक, आपनेमरनेक बिचार बा परयास करल, आर सोकाकुल लोकवइन (जकर पइरवारें कोय आपनेमरन करल हथ) कर आपनेमरनेक बादे गोटा गोटी उभरेक अनुभव से लोक गुलाक कहनीगुलीन दोसर लोकवइन में आसाक संचार कइर सके हे जकर में ऊ लोक टाव संकटेक सवंय बा तनावेक सवंय जियेक टा चलइत रहे हे आर ऊ सवंय के गुजाइर सके । ऊ लोकेक आपनेमरनेक भीतरी समझ दोसरों के ई समझेक मदइत कइर सके हे कि आपनेमरन करवइयाक मन करेक बेरांज की हव हइ। आर केव ऊ सवंय कइसन महसूस करे हे ई रकम ऊ दोसरों के सहजोग कइर सके हे ।

लोक जे सोकाकुल (पइरवार में ककरो आपनेमरन कर बजह ले) हइ ओकर अनुभव से की रकम से ऊ फेर से एगो सामाइन जिनगी जी रहल हे हाम दोसरो लोकवइन के मदइत कइर सके हिये जे आपने आपनेमरन से हवे वाला खति कर अनुभव से गुजरल हइ, आर आपनेमरन कर भयावता के बुझे पारल हइ बा ओकर ई बिसुवास हतय की उसब ई खतिक संगे भी जिनगी जीये पाइबथीन ।

बुइझ के उसकावेक , लोकवइन तक पहुंच के बा ओकर से बात कइर के बा अनुभव बांइट के हामिन सब काम–काज करेक खातिर ओकर में बिसुवासेक पोंग करे चाहो ही । आपने मरन के रोकेक खातिर हामीन सब के आलों में इंजोर बने हतय , ओकर में जे तकलीफ में हइ।

"तोहिन आलो में इंजोर बइन सको हिया, ककरो कर जिनगी में"

लोकेक तक पहुंचे आर ओकर मदइत खातिर आपने बहरावा

तोहिनेक समाजें ककरो कर मदइत खातिर सवंय बहरावा – पइरवारेक एगो सदस्य, एगो संगी बा हियां तक कि एगो आनचिन – ककरो दोसर कर जिनगीक दिसा बदइल सके हे ।

तोहिन केकरो परवाह करहिया त जाहिर कइर के तोहिन ककरो आसा परदान करें मदइत कइर सकल हा । हामिन सब ककरो न ककरो रूपें एगो भुमिका निभाय सकल ही । एकर फरक नाय पडे हे कि ऊ केतना छोटो हइ। हामे ई कधियो नाइ जाने पाइबय की हामे की कइर सकल ही जेकर से कोन्हो फरक पड़े हे। हमनी हब मदइतेक हांथ लोकेक तक बढ़ाय सकल ही केकरो से बात कइर सकल ही। तोहिन के ओकर बतवेक जउरत नाय हे की करल जाय बा समस्याक समाधान की हइ। आबगा ओकर तनाव खातिर बा आपनेमरन के बिचार के सुनेक खातिर ओकरा सेनुक ठांव ठेकान देल से ही केकरो कर मदइत पाय सकल हथ। छोटो बात जिनगी बचाय सकल हइ। आर जीवनें संघर्ष कर रहल कोन्हो लोक में जुड़ल आर आसाक भाभना जनमाय सके हे ।

अइसन लोकेक पता लगवे जे जीवन में मोसकिलों सामना नाइ करे ।

तपने मतरनेक चेतावनी वाला संकेत में आरों चीज मिसवल हइ– हतास राग नाय सुनल राग , बदलल भाभना, लापलवाही काम करेक , बिन सोचल बुझल जोखिम काम काज में मेसाय जायेक, अइसन फंसवल महसुस करेक जे रकम बांचेक कोय डहर नाय हे। दारू बा नसापान दवा गुला बेसी ले बेसी खायेक, संगी, पइरवार बा समाज से दूरी बनवेक । एकरा छाड़ा फिकिरे दुबल रहेक अनावश्यक उत्तेजित करेक। बेसी ले बेसी निंद नाइ हवेक । बेसी सवंय सुतल रहेक आर अचके बेर बेर मन मिजाज बदलइत आरो आरो। आपनेमरन कर चेतवेक संकतवइन में मेसवल हइ।

जउरत नाइ हे कि तोहिन पास सभे समस्याक समाधान हवे ।

लोक अकसर कुछो कारन से मदइत खातिर तइआयर नाइ हवे पारे। जेकर में ई नाइ जायेक डरो मेसाइल हे। कि की करल जाइ। ई इयाद राखेक मदइत करेक खातिर कोय बिसेस तरीका नाय हवे हे जे लोक । तनाव में हवे हे अकसर ऊ कोय बिसेस रकमेक राय नाय चाहो हे। दोसरेक भावना के बुझेक आर महसूस करेक , दुलार राखेक ,बेस तरीका से फिकिर बतवेक, संसाधनों कर गियान हवेक बा मदइत करेक इच्छा राखेक, ई सब चीज आपनेमरन के रोकेक खातिर महत हे।

ऊ लोक आपनेमरन कर परयासेक बाद जीयंत बाइच गेल हे ऊ हमरा बेसी बताय सकल हइ। बा सिखाय सके हे की की रकम दोसर लोकेक सबद , आर काम महत होय सकल हइ। ऊ लोक गंभीर आपनेमरनेक बिचार ले बहराय चुकल हथ। ऊ बराबरइर कहे हे की कोन्हो न कोन्हो बिसेस सलाहक तलास में नाय हल । दु रो से मिले वाला दुलार बा दुख बेथा के बुझेक बा महसुस करेक भाभनाञ ओखिन के जिनगी में साकारात्मक बदलइत करल आर ओकरा पुरा रूप ले स्वास्थ्य हवेक में जोगदान देल हइ।

ककरो से पुछेक खातिर डर नाइ कि ऊ आपनेमरन करेक खोइज रहल हे।

एगो आरो कारन हे कि लोक मदइत नाइ करे खोइज रहल हे । ऊ ई हइ की ऊ खबरावे काहुं ऊ आपन इसथीति के बेंडाय त नाइ देतय । ई हिचकिचाहट के समझेक जाय सकल हइ।

काहे की आपनेमरन के संबोधित करेक एगो मोसकिल मुद्दा हइ। एगो छुटेक संग एकरे बारें बात करें गेले जे लोक कमजोर हे ऊ आपनेमरन करे खातिर बा ओकर बारें बिचार करे खातिर जिमिरजिट नाइ लाइग गेल हे , सबुत दय के कहल जाय त अइसन एकदमें नाय हे , सहारा दियेक बा सुनेक खातिर तइयार रहेक तनाव कम करेक खातिर मदइत करे हे ना की एकरा बढ़वे हे ।, कोय लोक जे दोसर के बात दुलार आर भाभना के समझेक महसुस करेक आर बिना कुछो आलोचना ऊ लोकेक जिनगी में उम्मीद के फेर से थापल जा सकल हे। हाम ओकर बात कइर सकल ही ओकर से पुइछ सकल ही आर ओकरा प्रोत्साहित कइर सकल ही। ओचर कहनी बतवेक खातिर एगो छोटो परयास ढेइर महत हे।

सवंय बहरावे – ई धेयान दियेक खातिर की तोहिनेक पइरवार के तोहिनेक संगी के बा तोहिन के संगी साथीक की होय रहल हे । पासे जाय के आर बात कइर के हाम जागरूक रहय सकल ही हाम की ककरा हामर मदइतेक जउरत हे ।

सवंय बहरावे – लोकेक ठीन पहुचेंक आर बात करेक खातिर लागे हे की ओखिन में कुछो बदइल हे की भिनाइल हे । पासे जाय के बा बात कइर के हाम ओखिन के मदइत लिये खातिर प्रोत्साहित कइर सकल ही जे आपनेमरन कर बिचारों ग्रस्त हे ।

सवंय बहरावे – ई जानेक खातिर तोहिनेक खातिर आर दोसर खातिर की मदइत हे । पास जायके आर बात कइर के हाम ओखिन के लोकवइन के सहारा दय सकल ही । आर ओकर दरद के साझा कइर सकल हइ। जेकरा जउरत हे ।

पइत एगो काम काज आर परयास ककरो जिनगीक डोर ले जोइड़ सकल हइ आर मदइत से जुइड़ सकल हे की ओकर जउरत हे आपने मरन ईए रोकेक खातिर हमरा आलक इंजोर बनवेक आवश्यकता हइ ओकर खातिर जे तकलीफ में हइ।

विश्व आत्महत्या निवारण दिवस 2022

हामिन काम-काज के माधियम से आसाक निरमान कइसे करब ?

कविता : चल नुनु चल रे

आपन माटीक राइख मान
एकरा खातिर बहाबो रकत
जाइल चलतो तै हमर सांस
दुसमनेक आगुं झुकबो शांत
कथुक नाय भय रे
चल नुनु चल रे....!
राखा करबो होबो कुर्बान
मतुर बोडर छोड़बो नाय
हमर माटी माय जेइसनो
आंख देखबेयाक दे टेंसन
खांटी माटी पूत रे
चल नुनु चल रे....!
चीन पाक नेपाल श्रीलंका
सगर बाजे हलो हमर डंका
आज सीमा पर तै तनातनी
सभीक पियाबो घीटल पानी
देश हमार भारत महान जानी
वीर पुत बढ़ें चल रे
चल नुनु चल रे...!
देबो हमें हांसी हांसी जान
जोगबो पुरखापतिक मान
सीमा पर दुसमनेक नजर
करेजाम बल थे डगर डगर
शहीद होब देखें डेंग ये
चलें नुनु चल रे....!

फाल्गुनी मरीक कुशवाहा
देवघर, झारखंड.

कविता : ढेसा - ढेसी

तोर दोस ने
हामर दोस?

रहा हामनी राय से
रहा हामीन राय से।

ककर दोस?
तनी कर होस ।

खूइन बोहे चाहे जाइ जान
हामनी मने एहे ठान।

तोञ देलही ठांव
बनाइ लेलो गांव।

हामनीके राज्य पाठ
हामनीके टूटल खाठ।

खियाइ पियाइ
करलो खेपा ।

हामनीक दहिए
घाव आर घोंस।

कागजे दइ
देलही ठेपा ।

ककर – दोस
हामर ने तोर दोस।

देलो दू चाइर
दिन रोटी मांस।

सुना काका – काकी सब
नाञ करा रेसा – रेसी।

दइ देलही
छउवाक आंस ।

माइन ला सब आपन गुनहा
छोइड देहाक ढेसा – ढेसी ।

ओकरा देलही
नोकरी चाकरी ।

छउवाक धराइ
देलही टोकरी।

ओकरा बनाइ
देलही बोस।

ककर दोस?
हामर दोस?

बनाइ लेलो
राजाइ पलंक ।

तोर काठ
पात से।

लइ लेलो गाडी घोडा
लूइट के तोर छोडा से।

गाइर दे हो
आर मारो हो।

भगाइ दे हो
तोरा गांव ले।

हामनिक खतियान
मेटाइ दे हो।

झार न्यूज़ मे विज्ञापन के लिए
संपर्क करें : 7717748632

झार न्यूज़ के दुइयो संपादक दिनेश कुमार दिनमणि आर अनाम अजनबी जी के जनमदिन कर हिया खलास बधाई

झारखंडेक परब : जितिया पुजा

संदीप कुमार महतो

राँची : कहल जाहे भारत एगो परब तिहारेक देस लागइ। जेकर में सभे समाज कर लोक पुजा पाठ कर हथ। हालांकि हिन्दु धरम में कुछो न कुछो परब पइत दिन हव हइ। जेकर में लोक ढेइर हुब – हुलासे मनवो हथ। ओकरे में जितिया परब बा पुजाव मेसाइल हे। जितिया बा जिउतिया पुजा में मांय सभे आपन छउवाक ढांगा उमइर खातिर करल जाहे। एकर में तीन दिन पुजा करल जाहे। संजत उपास आर पारना।

वइसे एकर में एगो पारंपारिक मान्यता हे जदि संजत, उपासेक दिन जेकर घरे नावा जनम हवे , जेरम गाय धेनवाइ ,बा छउवा जनमे तबय ओकर घरे पुजा करेक सुरू करोहथ । आर जदि ई संजत, उपासे मोइर गेले पुजा खतम होय जाहे। बाकी लोक एकर पुजा पासा संजत उपास कइर सको हथ ।

संजत दिन – घारेक चिकन–चाकन कइर के अकरी थापो हथ। जे माटीक चाहे पीतरेक हाड़ी में बुट , कुरथी, मुंग बा बोरोय आरो–आरो । एगो खिरा बेटा राखाइल जाहे। एगो छोटो मोटो अकरी ओगरा राखाइल जाहे ।आर पेचकी पाते हाडी टाके ढापोहथीन। आर एक तनि धान सिन्दुर हाड़ी लागाइ दे हथ। आर बांध बा नदी नहाइले जा हथ। जहां नहाय के खिरा पात बा झिंगा पाते दतुन पानी आर तेल हरदी देहथ ई

लगाइत तीन दिन तक चलइत रहे हे। ओकर बाद घार घुरी आइ के दही चुरा खा हथ। ओकर बादे दाइल भात खा हथ । उपास दिन – पुजा हवे हे जेकर में डाली टोकी साड़ी झुला करअइनी धान बिन बांधना सुपली टुपा । कतारी , केवा बोर बांस आम डोहरा बेलंजा हरतकी रहे जेकरा पुजा कर हथ । कतारीक पाते पुवा पकवान आर खिरा चाइट चे के टांगल बा लरकावल जाहे जेकरा पुजा भेल बादे ओकरा परसादी बुइझ के तोइड ले हथ ।

ई पुजा आपने भी कइर सको हथ बा पंडित से भी पुजा करवो हथ। पारना दिन – पुजा पाठेक सामन सब बांधे जाइ के बसांइ दे हथ। ओकर बाद घारे आइ के माटीक हाड़ी में अरवा चार के भात संगे पांच,सात,नउ (बुट, कुरथी , पेचकी , पुइ साग, सारो कंदा, झिंगा ,गंधारी साग, कोहड़ा) रकमेक तियन बनावे हे जेकरा परसादी कहल जाहे । ऊ परसादी भीतर घारे चापे हे सेटा आबगा बेटा छउवा ही खाय सको हथ । बाकी टा बेटी छउवा सब खा हथ । ई रकम मनवल जा हे जेकर घर पइरवार हुब हुलासे मनवो हथ ।

ई कथाक नाता गोता महाभारत से जुड़ल हइ। युद्ध में बापेक मोरल बाद अश्वत्थामा ढ़ेइर रागाइल हल । बापेक मोरलेक बदला लियेक खातिर पाण्डव कर सीवीर गेला आर ऊ पांच लोक के मोराय देल । ओकरा लागलय की हामे पाण्डव सब के माइर देल हिये मेंतुक पांडव जियंत हल । जखन पाण्डव ओकर पास आइला तखन ओकरा पता चलल की ऊ द्रौपदी के पांच बेटवइन के माइर आइल हे । ई गुला देइख के अर्जुने अश्वत्थामा के बंदी बनाय के ओकर दिव्य मनी के लुइट लेल ।

अश्वत्थामाञ ई बातेक बदला लियेक खातिर अभिमन्युक बहु उतरा कर पेटे पइल रहल छउवा के मारेक जोजना बनवे लागल । ऊ पेटे पइल रहल छउवा के मारेक खातिर ब्रम्हा असतर चलवल । जेकर से उतरा कर पेटेक छउवा मोइर गेल । मेंतुक ऊ छउवा के जनम लियेक ढेइर जरूरी हल । एहे खातिर भगवान कृष्ण उतराक मोरल छउवा के पेटे ही फेर से जीवित कइर देल । पेटे मोइर के जियंत हेल खातिर ई रकम उतरा कर बेटा कर नाम जीवित पुत्रिका पइड़ गेल । आर तखने से छउवाक बोड़ उमइर खातिर जितिया पुजा करे लागला।

सहर ले गांव तक पोहचल बिकासेक डहर

अनाम अजनबी

गांव के आखरी आदमी तक बिकास के गाड़ी जा हक तबे बिकास देखा हेक। एहे खातिर सरकार रोजे कोनो नि कोनो उपाय करते रहे हेक। मकुन बिन जनसहयोग के कोनो काम नाय होवे पारे हेक। एहे सोब दइख के गांवेक आदमी सोब बिकासेक कामे हाथ बन्टवे लगल हथ। सभे आदमी के बिकास करेक अधिकार हेक। हमर देस मे कोनो भेदभाव नाय हे। हर अबदींन के अधिकार लागे की जिनगिक बिकास खातिर जरूरी साधन के उपयोग कइर के जिनगी बेस ढंग से जिये। आदमी होशियार जीव लागे उ आपन साथ गोटे समाज के बात करे हेक। काहे? बिकासेक खातिर!

कोई भी बिकासेक काम आगु बढे हे तो समाजेक भीतर से ही आगु बढे हेक। आर समाजेक भीतर हेल बिकास के समाजिक बिकास कहल जा हेक। आर ईटा जानल– बुझल बात हेक की समाज मे आबदीन रहे हे। आर ओहे अबदींन सब के सहजोग से कोनो बिकासेक बात आगु आगु कुदे हेक। से ले हम इटा जोर दइ के कइह सक ही बिन जन–सहयोग के कोनो बिकासेक काम नाय होवे पारे हेक।

बिकास के गाड़ी कुदवे खातिर जन सहयोग बड़ी जरूरी हे। सरकार रोजे कोनो नि कोनो बिकास के गांवक आखरी आदमी तक पँहुचावे खातिर नाना रकम के काम करे लागल हे।

एगो कहावत हे कि ष्जब जागली तबे बिहानष मने की जब –जब जागली तब तब बिकास भेल। गांवेक आदमी गांवे रइह के सरकार के देल कोनो बिकास काम के समझाय सके हेक आर फिर गोटे समाज के बिकास बात कइर सके हे। आर गोटे समाज मे एहे होवे भी लागल हे। सभे आदमी कोनो नी कोनो तरी सहजोग करे लागल हथ।

बिकासेक बात हम दु तरी से देखअ ही एक ठो गाँवेक बिकास आर दोसर बठे देसक बिकास। आइझ भी हमनिक देस में बड़ी अइसन गाँव हे जंहा बिकास गाड़ी ढुके नाय पारले हे। आर एखनो नरक नियर जिनगी जिये लागल हथ। मने की कोनो कोनो गाँव में अभियो वइसन बिकास नाय भवे पारले हे जइसन होवेक चाही। काहे की? हुन्वा के लोग जागे ही नी पारले हथ। आर जे दिन जागता से से दिन बिकासक डिबरी बरत। आर जिनगी इंजोर देखाईत। बस वईसन जगह हमिंन जइसन लोग के जागे हेवत आर गोटे समाज के जगावे हेवत। तबे हमर गांवे घरे विकास हेवत। एकर खातिर गांवेक जनजीवन आर ओकर समसिया के जाने हवत। जँहा के आदमी सीधा साधा रह–हथ ओखीन के मांझे जाय के अइसन बीचार धारा आर करांती पइदा करेक हेतक जकर से जकर से जनमानस के दसा दिसा बदइल के आपन जिनगी के छोट मोट जउरत के पुरा कइर के बेस लेखे रहता।

बिकासेक बिहीन तो सरकार करे हे मकुन ओकरा पानी पटवेक काम जनता करे हे। ओकरा बढ़ावे खातिर गोटे देश दुनियाय के लोग देख भाल कर हथ तबे कंही बिकासेक गाछ बाढ़े हे। तब जाय के बिकासेक छान्हइर में सकून के जिनगी जी हथ।

जन सहजोग के बिना कोनो बिकासेक बात सोचईले नी सोंचा हे। गांवेक लोग देस के आगु बढवे खातिर हर समय आगु रह–अ हथ। ओखीन के बीच सकारातमक संदेस जा हेक आर फिर एक के एक जुड़ते चइल जा हथ। तबे बिकासेक गाड़ी आगु आगु कुदे हे।

आइझ भी हमींन के समाज में अइसन ढईरे आदमी हथ जी आपन इमानदारी भाईचारा से समाज के आगु बढ़ावे खातिर सहजोग करे लागल हत।

आइझ हम सब के दिल से समाजेक बिकास में सहजोग करे हेक। ओकरा घर– घर ढुकवेक हेवत नाय तो बिकासेक बात खोन्धर रइह जातक। एक एक आदमी के समझावे बुझावे हेतेक। आर एकर खातिर जनता के अनुकूल अवसर मिलेक चाही। जनता तो उ चीज लागे जकर तनिक असहजोग से नाम आर काम मेटाइ जा हेक, आर तनिक सहजोग से दिन दु गुनी रात चौगुनी न तरकी भी करे हेक।

एक बार महात्मा गाँधी अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ असहयोग आंदोलन करल हेला। काहे ले? उ जाने हला कि जनता के एक दिन के असहयोग से अंग्रेज सरकार के काम जहाँ के तहाँ रूइक जातेक आर बिकास के गाड़ी ठढुवाइल रहतक। गांधी जी जान हला जनता के ताकइत के। आर वइसन भेल। गोटे देस के आबदीन सहजोग नाय करला। मजबुरन फिरंगी सरकार के गांधी जीक बात माने पडल।

जनता जनारदन के सहजोग से जहाँ बिकासेक गाड़ी कुदे हे हुन्वे ओकर असहजोग से बिकास के बाती बुझाय जा हेक।

कहल गेल हेक की ष्अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ताष कोई भी बिकासेक महान काम के पुरा सफल होवे खातिर गोटे समाज के जनता के सहजोग जरूरी हेक। चाहे उ सिछा के छेतर हे, स्वास्थ के हे, चाहे खेती बारी के हेक या सड़क पानी बिजली के हेक। सभे काम मे जन सहजोग जरुरी हेक।

शिक्षकों की मर्यादा बनी रहे

भारतीय विद्वानों ने कितना चिंतन , मनन कर गुरु को समाज के सर्वोच्च गरिमा पद से विभूषित किया है। वास्तव में गुरु छात्रों में शुभ–संस्कारों, विचारों एवं आचरणों के सर्जक के नाते सृष्टिकर्ता ब्रह्मा हैं। उन्हें उनके पालन–पोषण निमित्त सक्षम व स्वावलंबी बनाने के नाते पालनकर्ता विष्णु हैं तथा उनके अशुभ संस्कारों व अंतर्विकारों को समूल नष्ट कर उखाड़ फेंकने के नाते वे प्रलयंकर शंकर हैं।

परंतु यहाँ श्गुरुश शब्द का विश्लेषण अर्थ देखें तो – श्गुश का अर्थ है अंधकार (अंधेरा) और श्रुश का अर्थ है निरोधक अर्थात रोकनेवाले यानी प्रकाश अंधकार और प्रकाशबहुअर्थी शब्द हैंस अंधकार से अभिप्राय है– कष्ट, चिंता, परेशानी, अवनति, अशांतिस तो दूसरी ओर प्रकाश का अर्थ है – इन समस्त वेदनाओं को दूर करना और भय रहित व्यक्तित्व को प्रदान करना। इस प्रकार गुरु नाम के अनुसार भी छात्रों के समस्त अंधकार को हटाना और उसके स्थान पर साफल्य साम्राज्य कायम करना गुरु का कार्य है। यही तो गुरु के जीवन का लक्ष्य व साधना है परन्तु यह स्पष्ट है कि छात्र ही घर,परिवार और राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं। इनके ही कंधों पर देश का दारोमदार है। इन भावी कर्णधारों को राष्ट्र एवं समाज के लिए पूर्ण मानव बनाना गुरु का कर्तव्य है। महर्षि अरविंद ने कहा है– श्गुरु राष्ट्रीय संस्कृति के चतुर व कुशल माली हैं, जो संस्कारों की जड़ों में खाद देते और अपने श्रम से सींच–सींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं।' नागरिकों का समूह ही राष्ट्र है। गुरु ही अबोध बालक को पढ़ा–लिखा कर समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी व होनहार बनाता है इसलिए गुरु को युग और राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। प्राचीन काल में गुरुओं का बड़ा मान, सम्मान और आदर था। दिग्गज योद्धा व नरेश इनके समक्ष माथा टेका करते थे।

परंतु आज भी समाज में एक से बढ़कर एक धुरंधर विद्वान, धन्याढ़ व्यक्ति, डॉक्टर, इंजीनियर, नेता, अभिनेता उपस्थित हैं। इसके बावजूद भी अभिभावक अपनी भावी पीढ़ी एवं कुल दीपक को एक साधारण शिक्षक को सुपुर्द कर देते हैं क्योंकि उन्हें पता होता है कि साधारण–से दिखने वाले शिक्षक का व्यक्तित्व असाधारण है। समाज में यही सच्चे इंसान, सज्जन एवं सत्पुरुष हैं और इन्हीं की सानिध्यता को प्राप्त कर मेरा कुल दीपक प्रज्वलित होगा। परंतु वर्तमान समय में शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गयी है। आज के दौर में शिक्षा तिजारती बन गयी है और शिक्षण व संस्थान एक मिशन से ज्यादा मुफीद धंधे में तब्दील हो गया। जहाँ स्कूल जाने को लेकर प्रचार, पर सरकार करोड़ों रुपए खर्च करती है। स्कूलों में दाखिला बढ़ाने के लिए तरह–तरह के लुभावने प्रचार–प्रसार कर – मिड डे मील, पाठ्य पुस्तक, पौषाक, छात्रवृत्ति एवं साईकिल वितरण किया जाता है। बावजूद बहुत कम दाखिला हो पाती है। इसका मुख्य कारण सरकारी शिक्षकों के प्रति लोगों का हीन एवं नगन्य भाव से ग्रसित होना है, पर इन शिक्षकों की विद्वता पर अँगुली नहीं उठाया जा सकता। सरकारी कार्य–प्रणाली उन्हें शिक्षण कार्य करने नहीं देती है।

हर गुरु एकलव्य जैसा कर्तव्यनिष्ट, धर्मपरायण एवं आदर्श शिष्य प्राप्त करने को आतुर व अधीर होते हैं। ताकी वे अपने अनुभव व संचित ज्ञान को प्रदान कर शिक्षार्थियों को देश एवं समाज के लिए सज्जनता का व्यक्तित्व प्रदान कर समाज के लिए स्रष्टा और सर्जक बने क्योंकि शिष्य ही संपूर्ण जगत् का भावी कर्णधार हैं। इनके विकास में ही देश का उत्थान है।

पर गुरुओं को भी, गुरु द्रौणाचार्य जैसे किसी एक शिष्य को श्रेष्ठ बनाने के लिए अन्य को तिलांजलि नहीं देनी चाहिए अपितु सभी शिष्यों के प्रति संभाव की नितांत आवश्यकता है। जिस प्रकार पेड़–पौधे सर्वकल्याण हेतु जात–पात, भेद–भाव, ऊँच–नीच की भाव न रखकर सभी को समान रूप से प्राणवान आक्सीजन प्रदान करते हैं। ठीक उसी प्रकार शिक्षकों को अपने सभी शिष्यों के प्रति संभाव रखते हुए शिक्षा रूपी तीसरे नेत्र को प्रदान करनी चाहिए। जो वर्तमान, भूत एवं भविष्य देखने में सक्षम है। शिष्य इन दो नेत्रों से सिर्फ जड़–चेतन या मूर्त पदार्थों को देख सकते हैं परंतु गुरु प्रदत्त तीसरे नेत्र से वर्तमान, भूत एवं भविष्य देखने में सक्षम है।

पर सरकारी महकमे की शिक्षा – व्यवस्था में आमूल चूक बदलाव लाने के लिए गुरुओं को कठिन तपस्या करनी होगी। शिक्षा की धुरी शिक्षक हैं। शिक्षा ह्रास को दूर करना इनका प्रमुख दायित्व है। आज शिक्षकों की गरिमा गिरी है। 1920 ई से 1948 ई तक गुरु के रूप में कार्य करनेवाले महान दार्शनिक व विद्वान सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन की आत्मा आज की जर्जर शिक्षा व्यवस्था से कचोट रही होगी। जिन्होंने पाँच सितंबर के अपने जन्मदिन को शिक्षकों को दिया था। आज शिक्षक दिवस एक खानापूर्ति रह गयी है। शिक्षक दिवस की मर्यादा अक्षुण्ण रहे – इसके लिए शिक्षकों को सोचना होगा और उन्हें बहरहाल गुरु बनना ही होगा।

रमेश कुमार महतो, शिक्षक
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,सरिया (गिरिडीह)

खोरठा कविता

ओझाक (सोखाक) भेउ

हां रे,,, के,, के,, देखले हा –
भूत – डाइन ?
जो,,जो,, हाम्हूं देखबइ,
तनी हांकाइ आन,

कइसन होवे हे डाइन भूतेक जाइत
कइसें उ सब मोरावे हे मानुसेक जाइत

हांकाव,,हांकाव,, उखनी के
तनी हाम्हूं देखबइ,,
उखनी सें बतियइबइ,,
गप सप करबइ
हाल चाल पूछबइ !

कि कहलें,,,
उ सब रहो हथ –
सोसाने,, मसाने,, मुरदार घाटें ?
उखनी के बस कइर राखल हथ –
गांवेक ओझा,, गुनिया,,आर सोखा,,,!

अरे,धुत् बोका,,, !
इ सब जते हथुन ओझा,सोखा,,
खाली मानुस के दे हथ – धोखा,,
लोक के बनवो हथ बुड़बक
इ सब बड़का हथ हूंसियार,,
समझाइ कें लोक के कानापतियार,,

अंइंठो हथ – मुरगी,चेंगना,
काड़ा, भेड़ा,पांठा,,,
टाका,,पइसा,,
एहे लागोउ इखनिक खिस्सा !

एहे लागोउ इखनिक धांधा,,,
ढोंग,,ढांग,,आर फाचका –फांदा,,

सेइ ले – दादा! सुना रमेशेक बात
चेतभा तो चेता,,,
नाञ तो पइर जीभे फेराञ,,
बेंचाय जितो बारी –झारी–खेता,,

ढोंग–ढांग,,कानापतियारी,, आर फाचका –फांदाश्क
आब सुना तोहनी – पोल
काने कापारें टीका फोंका
तिलक चन्दन गोल गोल

मेढ़ मूरतिक पूजा पाठें,,
काड़ा भेड़ा पांठा काटे,,
मुरगी चेंगनीक रकत चाटे,,
खुब बजवो हथ ढोल,,,!

चाउर धान के सगुन देइख,
टोला टाटीक धरवे नाम,,
भाई भतीजा रिस्तेदारी में,,
झागरा बझवेक करो हथ काम,,
निंगछाछोरीक नामें सबके,,
बनवो हथ भकलोल,,,!

मोरल बादें सभे लोक
पोड़ल बादें होइ जार – खार,,
सोंइंच देखा कि रुपें उ,,
कइसें लेतइ कोन्हों आकार,, ?
जब मोरल मुंड़ी नाञ घांस खाय,,
तो ओझाक बापें कि भूत बनाइत,,?

झार न्यूज मे विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
7717748632

वर्ष :01, अंक : 05 , रजिस्ट्रेशन : UDYAM-JH-19-0000800, संपादक (हिंदी): प्रणय प्रबोध पाठक, संपादक (खोरठा): दिनेश कुमार दिनमणि, अनाम अजनबी, संपादकीय सलाहकार : नवजीत शाहदेव, फोन : संपादक 7717748632, विज्ञापन : 9199255612, प्रसार विभाग : ओम प्रकाश कुमार, 9199255612, सुझाव या शिकायत ई मेल : khorthajharnews@gmail.com पर मेल करें।